मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

खरीफ प्याज की उन्नतशील खेती

माता प्रसाद, सुतुनु माझी एवम राजमणि सिंह
उद्यान विज्ञान विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
केंद्रीय विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025

परिचयः वैज्ञानिक नाम एलियम सेपा एल. और एलिएसी कुल का यह पौधा है। प्याज एक कंद वाली फसल है। इसमें गुणसूत्रों की संख्या 16 पायी जाती है। वहीं इसके जन्मस्थान की बात करें तो मध्य एशिया (अफगानिस्तान) जाना जाता है। प्याज भारत देश की महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसलों में से एक है। आलू के बाद प्याज का महत्वपूर्ण स्थान है, यह एक ऐसी सब्जी है जिसका प्रयोग मसालों के रूप में बहुतायत में किया जाता है शाकाहारी एवं मांसाहारी भोजन बनाने हेतु मसालों के रूप में एवं सुखाकर अचार के रूप में तथा स्वाद हेतु तीखापन एवं सुगंध के लिए भोजन में इसका प्रयोग किया जाता है। प्याज में एलाइन प्रोफाइल डाईसल्फाइड होता है, प्याज में कार्बोहाइड्रेट खनिज लवण प्रचुर मात्रा पाए जाते हैं। यह पाचन शक्ति में सहायता देती है और आंखों के लिए लाभदायक है।

भूमि एवं जलवायुः भारी भूमि को छोड़कर प्याज की दोमट मिटटी, बलुई दोमट में प्याज की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। खरीफ प्याज की खेती के लिए उचित जलनिकास की सुविधा होनी चाहिए स भारी भूमि में प्याज के कंदों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाता है। जिससे प्याज की पैदावार में बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके उचित बढ़वार व पौधों के विकास के लिए 15–25°C तापमान उपयुक्त होता है ।

प्याज की गैर–मौसमी उत्पादनः प्याज को आमतौर पर रबी की फसल के रूप में उगाया जाता है, जिसे अप्रैल–मई में काटा जाता है, जो सितंबर–अक्टूबर तक बाजार में उपलब्ध होता है। देश में अक्टूबर से मार्च तक प्याज की आपूर्ति में महत्वपूर्ण अंतर है और परिणामस्वरूप कीमतों में वृद्धि हुई है। खरीफ प्याज का उत्पादन प्रति वर्ष कुल उत्पादन में वृद्धि कर सकता है और साथ ही नवंबर–दिसंबर से फरवरी–मार्च तक महत्वपूर्ण अवधि के दौरान बाजार में ताजा प्याज की मांग को पूरा कर सकता है। खरीफ प्याज रबी फसल की तुलना में उच्च कीमत प्रदान करता है, लेकिन, खरीफ की फसल के रूप में इसकी खेती तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण कुछ क्षेत्रों में सीमित है। खरीफ के मौसम में एक अच्छी फसल इस कमी के दौरान प्याज की मांग और आपूर्ति के अंतर को पाट सकती है और साथ ही किसान वैकल्पिक फसल के रूप में अधिक लाभ कमा सकते हैं।

खरीफ में बुवाई के लिए उन्नत किस्मेंः भीमा डार्क रेड, एग्री फाउंड डार्क रेड, भीमा शक्ति, एन–53, भीमा सुपर, एल– 883.

पौध तैयार करनाः पौधशाला के लिए चुनी हुई जगह की पहले जुताई करें इसके पश्चात उसमें पर्याप्त मात्रा में गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट डालना चाहिए। पौधशाला का आकार 3 मीटर × 0.75 मीटर रखा जाता हैं और दो क्यारियों के बीच 60–70 सेमी. की दूरी रखी जाती हैं जिससे कृषि कार्य आसानी से किये जा सके। पौधशाला के लिए रेतीली दोमट भूमि उपयुक्त रहती है, पौध शैय्या लगभग 15 सेमी. जमीन से ऊँचाई पर बनाना चाहिए बुवाई के बाद शैय्या में बीजों को 2–3 सेमी. मोटी सतह जिसमें छनी हुई महीन मृदा एवं सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद से ढंक देना चाहिए। बुवाई से पूर्व शैय्या को 250 गेज पालीथीन द्वारा सौर्यकरण उपचारित कर लें। बीजों को हमेशा पंक्तियों में बोना चाहिए। खरीफ मौसम की फसल के लिए 5–7 सेमी. लाइन से लाइन की दूरी रखते हैं। इसके पश्चात क्यारियों पर कम्पोस्ट, सूखी घास की पलवार(मल्चिंग) बिछा देते हैं जिससे भूमि में नमी संरक्षण हो सके। पौधशाला में अंकुरण हो जाने के बाद पलवार हटा देना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाये कि पौधशाला की सिंचाई पहले फब्बारे से करना चाहिए। पौधों को अधिक वर्षा से बचाने के लिए पौधशाला या रोपणी को पॉलीटेनल में उगाना उपयुक्त होगा।

पौधशाला शैय्या पर बीज की बुआई एवं रोपाई का समयः खरीफ मौसम हेतु पौधशाला शैय्या पर बीजों की पंक्तियों में बुवाई 1–15 जून तक कर देना चाहिए, जब पौध 45 दिन की हो जाएं तो उसकी रोपाई कर देना उत्तम माना जाता है। पौध की रोपाई कूड़ शैय्या पद्धति से तैयार खेतों पर करना चाहिए, इसमें 1.2 मीटर चौड़ी शैय्या एवं लगभग 30 से.मी. चौड़ी नाली तैयार की जाती हैं। रोपाई करते समय कतारों के बीच की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखते हैं।

भूमि की तैयारीः प्याज के सफल उत्पादन में भूमि की तैयारी का विशेष महत्व है। खेत की प्रथम जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए। इसके उपरान्त 2 से 3 जुताई कल्टीवेटर या हैरा से करें, प्रत्येक जुताई के पश्चात् पाटा अवश्य लगाएं जिससे नमी सुरक्षित रहे तथा साथ ही मिट्टी भुर–भुरी हो जाए। भूमि को सतह से 15 से.मी. उंचाई पर 1.2 मीटर चौड़ी पट्टी पर रोपाई की जाती है, अतः खेत को रेज्ड–बेड सिस्टम से तैयार किया जाना चाहिए।

सिंचाई एवं जल निकासः खरीफ मौसम की फसल में रोपण के तुरन्त बाद सिंचाई करना चाहिए अन्यथा सिंचाई में देरी से पौधे मरने की संभावना बढ़ जाती हैं। खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्याज की फसल को जब मानसून चला जाता है उस समय सिंचाईयाँ आवश्यकतानुसार करना चाहिएं। इस बात का ध्यान रखा जाए कि शल्ककंद निर्माण के समय पानी की कमी नहीं होना चाहिए क्योंकि यह प्याज फसल की क्रान्तिक अवस्था होती है क्योंकि इस अवस्था में पानी की कमी के कारण उपज में भारी कमी हो जाती है, जबकि अधिक मात्रा में पानी बैंगनी धब्बा(पर्पिल ब्लाच) रोग को आमंत्रित करता है। काफी लम्बे समय तक खेत को सूखा नहीं रखना चाहिए अन्यथा शल्ककंद फट जाएंगे एवं फसल जल्दी आ जाएगी, परिणामस्वरूप उत्पादन कम प्राप्त होगा। अतः आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अंतराल से हल्की सिंचाई करना चाहिए। यदि अधिक वर्षा या अन्य कारण से खेत में पानी रूक जाए तो उसे शीघ्र निकालने की व्यवस्था करना चाहिए अन्यथा फसल में फफूंदी जनित रोग लगने की संभावना बढ़ जाती हैं।

खाद एवं उवर्रकः प्याज के लिए अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 400 क्विंटल प्रति हेक्टर खेत की तैयारी के समय भूमि में मिलावें। इसके अलावा 100 किलो नत्रजन, 50 किलो फास्फोरस एवं 100 किलो पोटाश प्रति हेक्टर की दर से आवश्यकता होती है। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई से पूर्व खेत की तैयारी के समय देवें। नत्रजन की शेष मात्रा रोपाई के एक से डेढ़ माह बाद खड़ी फसल में देवें।

खरपतवार नियंत्रणः– फसल पर उगने वाले खरपतवारदृ सत्यानाशी(कटेली), चौलाई, दूब, मोथा, मकड़ा, खरतुवा । प्याज की फसल से खरपतवारों को निराई कर निकाल दें। फसल रोपाई के बाद 45 दिन के भीतर निंदाई कुड़ाई करें एवं ऑक्सीफ्लोरफेन (24 ईसी) 1 से 1.25 मिलीलीटर प्रतिलीटर का छिड़काव, रोपाई के 2 दिन पहले या रोपाई के 1 सप्ताह के भीतर अवश्य करें।

पौधा संरक्षणः

प्याज की आंगमारीः पत्ते पर भूरे धब्बे बाद में पत्ते सूख जाते हैं दृ इसके लिए 0.15ः डायथेन जेड–78 का छिड़काव करें।

मृदुरोमिल फफूंदीः पत्ते पहले पीले, हरे और लम्बे हो जाते हैं तथा उन पत्तों पर गोलाकार धब्बे दिखाई पड़ते हैं। बाद में ये पत्ते मुड़ने और सूखने लगते हैं। इसकी रोक थाम के लिए 0.35ः ताम्बा जनित फफूंदी नाशक दवा का छिड़काव करें।

प्याज का थ्रिप्सः इसके पिल्लू कीड़े पत्तों और जड़ों को छेद कर रस चूसते हैं। फलस्वरूप पत्तियों पर उजली धारियाँ दिखाई पड़ने लगते हैं और सारा फसल सफेद दिखने लगते हैं। इसके रोकथाम के लिए कीटनाशी दवा (मालाथियान) का छिड़काव करें।

प्याज की खुदाईः हरी प्याज की सामान्यत खुदाई 50 से 80 दिन बाद किया जा सकता है । यदि परिपक्व प्याज 90 से 145 दिन बाद खुदाई करना सही है। प्याज की फसल में पत्तियां जब पता 50ः गिर जाए उसके 10 से 15 दिन बाद ही खुदाई करनी चाहिए।

उत्पादनः खरीफ फसल से औसतन 200–250 क्विंटल प्रति हेवटेयर तक उपज हो जाती है।

भंडारणः आमतौर पर खरीफ की तुलना में रबी की प्याज में भंडारण करने की आवश्यकता ज्यादा होती है। फसल के पकने के साथ ही यह बाजार में कम बिकता है। भंडारण से पहले प्याज के कंदं को अच्छी तरह

सुखा लेना चाहिए। पके हुए स्वस्थ चमकदार व ठोस कंदं का ही भंडारण करं। भंडारण नमी रहित हवादार गृह में ही करं। भंडारण में प्याज के परत की मोटाई 15 सेमी से अधिक नहीं होनी चाहिए। भंडारण के समय सड़े–गले कंद समय–समय पर निकलते रहना चाहिए।